ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(9): 511-514
www.allresearchjournal.com
Received: 21-07-2020
Accepted: 25-08-2020

डॉ0 नीलम यादव
प्रवक्ता ललित कला, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जहाजपुल, हिसार, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 नीलम यादव
प्रवक्ता ललित कला, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जहाजपुल, हिसार, हरियाणा, भारत

हरियाणा में मूर्तिकला का क्रमिक विकास

डॉ0 नीलम यादव

प्रस्तावना:
हरियाणा में विभिन्न धर्मों की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं जैसे हिन्दू, बौद्ध व जैन। मूर्तिकला का मानव जीवन में धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशिष्ट स्थान रहा है। प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक अनेकों साम्राज्य बदले, परन्तु उस समय की संस्कृति और परम्परा आज भी इन स्थान–2 पर बिखरे अनेक मूर्ति शिल्पों में पूर्ण सुरक्षित हैं। यद्यपि प्राचीनकाल से ही भारत पर अनेकों विदेशी आक्रमण हुए और शासन क्षेत्र में भी परिवर्तन आए किन्तु मूर्तिकला की परम्परा के आदर्शभूत वैभव ने प्राचीनकाल से लेकर आज तक अपनी अपूर्व कीर्ति को स्थिर रखा है। मूर्तिकला की परम्परा किसी काल में कम तो किसी काल में अधिक रही, परन्तु सदैव जीवित रही और कभी पूर्णतः नष्ट नहीं हुई। प्रस्तुत शोध द्वारा हमें हरियाणा के मूर्तिकला के क्रमिक विकास (सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर स्वतत्रंता प्राप्ति) की मुख्य मूर्तियों के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

भारत की सबसे प्राचीन विकसित सभ्यता जो सिन्धु घाटी की सभ्यता या हडप्पा सभ्यता के नाम से जानी जाती है, हरियाणा में इसका आरम्भ लगभग ईसा से ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व हुआ है। हरियाणा में भी इस सभ्यता के अनेक अवशेष पाए गए हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि हरियाणा के लगभग 100 गाँवों में सिन्धु सभ्यता का विकास था। सैंधव लोग मूर्तिकला में बहुत निपुण थे। हरियाणा के संदर्भ में भी इस काल से सम्बन्धित विभिन्न पुरास्थलों–राखीगढ़ी, बनावली, मिताथल, बालू आदि से मृण्मूर्तियों के अनेक उदाहरण प्राप्त हुए हैं। इस प्रदेश में जलचर व पशुओं के अनेक मिट्टी के खिलौने प्राप्त हुए हैं जैसे मकर, मछली, मेंढ़क, कछुआ, भेड, बकरी, भैंस, गैंडा, मोर, तोते, चिड़िया व घुग्घी आदि। इसके अतिरिक्त ये लोग अपने घरों को सजाने के लिए मिट्टी की मूर्तियाँ बनाते थे। इस काल में मिट्टी से बने खिलौने साधारण तथा कलात्मक दोनों रूपों में मिलते हैं। इनका प्रयोग बच्चों के मनोरंजन तथा अभिजात वर्गीय लोगों के घरों की सजावट के लिए प्रयोग किये जाते थे। सैंधव लोगों में धातु की मूर्तियाँ बनाने का भी चलन था। इनके द्वारा मोहरों पर वृषभ, पशु देवता व शिव की सजीव आकृतियाँ उकेरी जाती थी। इसके अतिरिक्त इस काल में धार्मिक प्रतीकों वाली मूर्तियाँ भी बनाई जाती थी। सैंधव सभ्यता के पतन के पश्चात् आर्यों ने हरियाणा पर अपना राजनीतिक वर्चस्व कायम किया। हरियाणा में आर्यों के आगमन के पश्चात् कलात्मक व सृजनात्मक पक्ष अभिव्यक्ति में कुछ ठहराव आया। लेकिन इस काल में यहाँ काव्यात्मक पक्ष अधिक सजीव रूप से सामने आया। इस काल में लिखा गया साहित्य संसार में सर्वोपरि है। उत्तर वैदिक काल में मूर्तिकला में फिर से प्रगति आरम्भ हुई तथा इस समय से आर्यों की बस्तियों से भी मिट्टी के खिलौने प्राप्त हुए हैं। इनको बहुत सुन्दर तरीके से तैयार किया गया है। इसका एक उत्तम उदाहरण सिरसा से प्राप्त पुरूष और महिला मूर्ति है। इसको स्लेटी रंग का बनाया है। इस काल के अनेक मृदभाण्ड. तथा अन्य उपकरण दौलतपुर (हिसार) से प्राप्त हुए हैं। उत्तर वैदिक हडप्पा काल के चित्रित मृदभाण्ड़ भी हरियाणा के विभिन्न स्थलों से प्राप्त हुए हैं। वैदिक देवताओं में उस समय विष्णु, वामन, नरसिंह, वराह, ह्यग्रीव, ब्रह्मा, सूर्य तथा शिव–परिवार मुख्य थे। इसके अतिरिक्त मातृकाओं में कमला, महिसाषुर, मर्दिनी, चामुण्डा, दुर्गा तथा काली आदि देवियों की मूर्तियाँ दृष्टिगोचर होती थी। इस काल में कुबेर तथा यक्ष आदि ऐश्वर्य के देवता भी मूर्ति निर्माण द्वारा अस्तित्व में आए थे। अशोक के काल की मूर्तिकला में रूप–सज्जा, केश–विन्यास, भरे–भरे अवयव तथा अंगों पर उभरे चुन्नक्टदार घाघरे आदि कलात्मक सृजन की दृष्टि से विशेष महत्व रखते थे। अशोक के प्रस्तर स्तम्भ तथा उन पर उकेरी गई पशु–आकृतियाँ उस काल की ईरानी वास्तु कला के समरूप हैं, क्योंकि देशों का परस्पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान कलाकारों को प्रभावित करता है। इस काल की मूर्तिकला शैली में जिस प्रकार विशेष रूपायन, शालीनता तथा सौम्यता पत्थरों पर ड़ीारकर सामने आई थी, वह अन्यत्र किसी भी काल में दृष्टिगोचर नहीं होती है। हरियाणा में उपलब्ध दो प्रमुख प्रस्तर स्तम्भ इसके प्रमुख उदाहरण हैं पहला गाँव टोपरा (यमुनानगर) से तथा दूसरा गाँव कुणाल

(हिसार) से है। फिरोजशाह तुगलक ने पहले स्तम्भ का एक भाग उठवाकर दिल्ली में तथा दूसरा भाग फतेहाबाद में स्थापित करवा दिया था। दूसरा प्रस्तर स्तम्भ हिसार में स्थापित करवाया गया था। इस प्रकार स्तम्भ पर उकेरे गए भावों के माध्यम से हरियाणा में मौर्यकालीन कला की स्थिति को समझ सकते हैं। इसी तरह गाँव सुंधा (जिला अम्बाला) व नौरंगाबाद (जिला भिवानी) से प्राप्त मूर्तियाँ देखने योग्य हैं। इसके अतिरिक्त अग्रोहा व रोहतक से भी इस काल की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। हरियाणा के पलवल जिले से प्राप्त लाल पत्थर से बनी शुंग कालीन मूर्ति कला का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है, जिसमें यक्ष को एक साफा बाँधे, गले में हार, बडे–बडे कान, हाथ में शंखाकार वस्तु लिए हुए बनाया गया है। दक्षिणी हरियाणा के 'हथीन' व 'मादसा' नामक स्थानों से लाल बलुआ पत्थर के शुंग कालीन स्तम्भ प्राप्त हुए हैं। इन स्तम्भों पर बौध धर्म से सम्बन्धित दृश्य व विशेषताऐं दृष्टिगोचर होती हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि यह बौद्ध–स्तूप के चारों तरफ की रेलिंग का भाग है। हरियाणा के 'आमीन' नामक स्थान से शुंग काल से सम्बन्धित दो स्तम्भ प्राप्त हुए हैं। इन स्तम्भों में से प्रथम स्तम्भ पर एक यक्ष तथा दूसरे स्तम्भ पर एक यक्ष युगल की मूर्ति है। अब यह मूर्तियाँ राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली में स्थापित हैं। इस काल की प्राप्त मृण्मूर्तियों में मातृदेवी की मूर्ति कला–शैली की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सुध, रोहतक व अग्रोहा से प्राप्त मृण्मूर्तियाँ इस बात की पुष्टि करती है। शुंग काल में मृण्मूर्ति का एक अच्छा उदाहरण अग्रोहा से प्राप्त कुबेर की आकृति है। इसके अतिरिक्त इस काल की प्राप्त प्रतिमाओं में सुंध प्राप्त शुंगकालीन मातृदेवी की प्रतिमाएं कला शैली की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। कुषाणों द्वारा मूर्तिकला को राजकीय संरक्षण देकर बहुत प्रोत्साहित किया गया था। इस बात के साक्ष्य हमें समस्त हरियाणा में व्याप्त कुषाणकालीन मूर्तियों के स्थलों से मिलते हैं। इस काल में हरियाणा में मूर्तियों के मुख्य केन्द्र अम्बाला, अमीन, रोहतक, खोखराकोट, अग्रोहा, थानेसर व सतकुम्भा आदि हैं। इस काल में मूर्तियों के अग्रभाग में शुंगकालीन चपटेपन के स्थान पर अब सुडौल गोलाई दिखाई देने लग गई थी। मूर्तियों में अब पगड़ी के पेच भी दृष्टिगोचर होने लग गये थे और धोती की सिलवटों में भी अन्तर दिखाई देने लग गया था। उस समय के अभिजातवर्गीय समाज के सुख तथा वैभव का दर्शन कुषाण कालीन मूर्तियों में परिलक्षित होता है। हरियाणा में इस काल की दो रचनाएँ/मूर्तियाँ अति उल्लेखनीय हैं। जिनमें से प्रथम गाँव बेरी (रोहतक) के मुखलिगम की तथा दूसरी किलोई (जिला रोहतक) की है। ये दोनों ही मुखलिगम रचनाएँ चित्रकारी लाल पत्थर पर बनाई गई हैं। इनमें शिव के जिस सौम्य रूप को निरूपित किया गया था वह अन्यत्र कहीं भी परिलक्षित नहीं होते। हरियाणा के रोहतक जिले से 1967 में खोखराकोट टीले से भी लाल पत्थर का बना एक स्तम्भ शीर्ष भी मिला है, जिसमें मूर्ति उकेरी गई है। इसी काल की महात्मा बुद्ध के सिर की कुछ प्रतिमाएँ भी गुडगाँव, रोहतक, मोहनवाड़ी, झासवा (रोहतक), कुरूक्षेत्र से भी प्राप्त हुई हैं। महात्मा बुद्ध की दो सम्पूर्ण मूर्तियों में से एक ब्राह्मणवास (रोहतक) से और दूसरी नौंरगाबाद (भिवानी) से प्राप्त हुई हैं। इन सब प्रतिमाओं की कलात्मक छटा अनुपम है। कुषाण काल की अनेक मृण्मूर्तियाँ हरियाणा के झज्जर जिले में सुरक्षित हैं। जिनमें षड़भुजी महिषमर्दिनी की एक प्रतिमा उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त अग्रोहा से प्राप्त महिषासुरमर्दिनी एवं त्रिनेत्र शिव की शिरोभाग तथा खोखराकोट से प्राप्त दश भुजाओं वाली देवी की मूर्ति इस कला शैली का उत्तम उदाहरण है। गुप्तकालीन सम्राट कला के बड़े सरप्रेमी थे। यह काल राज्य में मूर्तिकला की दृष्टि से सर्वाधिक व्यवस्थित काल जान पडता है। इस युग की मूर्तियाँ अधिक सुन्दर और बेहतरीन हैं। भिवानी जिले के नौंरगाबाद गाँव में भी तीसरी व चौथी शताब्दी की मूर्तियाँ मिली हैं। इन मूर्तियों में से दो मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त थानेसर और सांघी से भी बुद्ध की दो प्रतिमाऐं प्राप्त हुई हैं। थानेसर (कुरूक्षेत्र) से प्राप्त बुद्ध शीर्ष पांचवी शताब्दी का है तथा सांघी से प्राप्त बुद्ध शीर्ष छठवीं शताब्दी का है। इस काल में शिव–पार्वती, गणेश, विष्णु, लक्ष्मी, गंगा, यमुना तथा सरस्वती की मूर्तियों को उनके वाहनों सहित बनाया जाने लगा था। इसलिए इन मूर्तियों में कुछ नयापन आ गया था। इस काल में अधिकांश ब्राह्मण धर्म सम्बन्धी मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं। बौद्ध धर्म सम्बन्धी बहुत कम मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं तथा जैन धर्म सम्बन्धी कोई भी मूर्ति प्राप्त नहीं हुई है। इस काल की अग्रोहा से प्राप्त ब्राह्मण धर्म से सम्बन्धित महिषासुरमर्दिनी तथा पत्थर से बना विष्णु शीर्ष गुप्तकाल की उत्कृष्ट रचनाऐं हैं। इस काल की विशेष बात यह थी कि बुद्ध तथा अन्य देवी–देवताओं को उनके परिवार सहित मूर्ति रूप प्रदान किया गया। हरियाणा में प्राप्त गुप्तकालीन मूर्तियों में शुंग कला के चपटेपन और कुषाण काल की गोलाई के स्थान पर तीखापन आ गया था। गुप्तकाल की गुरूकल संग्रहालय झज्जर में संग्रहीत विष्णु की गुप्तकालीन मृण्मूर्ति प्रतिमा विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। रोहतक जिले से प्राप्त वराह प्रतिमा, कोसली से प्राप्त विष्णु प्रतिमा, बास–पेटवाड़ की हरिहर प्रतिमा तथा हाँसी की वराहप्रतिमा इस काल की प्रतिनिधि कलाकृतियाँ हैं। गुप्तकालीन अनेक मृण्मूर्तियाँ अग्रोहा से प्राप्त हुई हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि उस समय में भी यह स्थल मृण्मूर्तियों की कला का केन्द्र होगा। मृण्मूर्तियों की अधिकता से हमें यह संकेत प्राप्त होते हैं कि गुप्तकाल में यह मृण्मूर्तियाँ मन्दिरों में स्थापित होगी। गुप्तकाल में भी हरियाणा का कला केन्द्र अग्रोहा सक्रिय था इस काल के शिव चेहरे को बहुत ही सुन्दर मुस्कान के साथ दर्शाया है। इनके सिर पर उर्ध्वाकार रेखाऐं फूलों को लगाने के लिए बनी हैं। इनकी आँखों व चेहरे में दैवीय आकर्षण है। इसके अतिरिक्त यहाँ से अनेक मूर्तियाँ व दृश्य भी प्राप्त हुए हैं। इनके विषय विभिन्न प्रकार के हैं, जैसे रामायण से सम्बन्धित दृश्य, कृष्णलीला से सम्बन्धित दृश्य, दो नन्दी बैल के सिर व माथे के टुकडे, शिव का पर्वत, सुन्दर मानव के सिर, अंलकृत हाथी व मगरमच्छ के सिर हैं। इस काल में बनी मृणमूर्तियों में भारतीयता की झलक आती है। इस काल में सौंदर्य बोध में भी भारतीयता के दर्शन होते हैं। मृण्मूर्तियों में केश–विन्यास के लिए नारी के कन्धों के पीछे घुँघराले केशों को बिखरा हुआ दिखाया गया है। इस समय मूर्तियों पर विभिन्न प्रकार के रंगों का प्रयोग किया जाता था। मूर्तियों को आग से पकाए जाने के कारण खुरदुरापन आ जाता था इसलिए उसे रंगों की तह से ढ़क दिया जाता था। इस प्रकार मूर्तियाँ अनुपम रूप से ज़ीरकर आई। गुप्तकालीन मूर्तिकला का प्रभाव समय बीतने के साथ–2 लुप्त हो गया था। इस बात की पुष्टि औंरगाबाद और बरवाला (हिसार) से प्राप्त दो शिव मूर्तियों से होती है। इन मूर्तियों में पुराने भाव तथा सुन्दरता का अभाव है। इसी काल में अग्रोहा से सूर्य देवता की मूर्ति, मोहनवाड़ी (रोहतक) से प्राप्त विष्णु की मूर्ति, फिजिलपुर (सोनीपत) से शेषशैय्या पर लेटे विष्णु की मूर्ति भी कला की दृष्टि से इतनी उत्तम नहीं है। हर्षकाल में मूर्तिकला की कोई अलग पहचान नहीं बनी लेकिन इस काल की मृण्मूर्तियों का घरों व मार्गों की सजवाट में अवश्य ही काफी योगदान रहा है। महाकवि बाणभट्ट ने हर्षचरित्र में श्री देवी के विवाह के समय नगर की सजावट के लिए अनेक कलाकारों की सेवाऐं प्राप्त की थी, जिन्होनें नगर को सजाने के लिए असंख्य मृण्मूर्तियों का निर्माण किया था, जिससे नगर की चारों दिशाऐं मूर्तिमय हो गई थी। उत्तर हर्ष काल में सबसे पहले हरियाणा प्रतिहार साम्राज्य का अंग बना था तथा इस समय की मूर्तियाँ हरियाणा के विभिन्न स्थानों से बड़ी संख्या में प्राप्त हुई हैं। इस काल के तोमर शासकों की मूर्तियाँ प्रतिहारकालीन मूर्तियों से कम सुन्दर हैं। इस समय हरियाणा में विभिन्न धर्मों की मूर्तियों का निर्माण होता था, जैसे ब्राह्मण, जैन व बौद्ध आदि। यह काल मूर्तिकला की दृष्टि से

उन्नत काल माना जाता है क्योंकि इस काल में विभिन्न माध्यमों (पाषाण, धातु) की उत्कृष्ट मूर्तियों के प्रत्यक्ष उदाहरण उपलब्ध हैं। इस काल में हिसार (हाँसी, अग्रोहा), रोहतक, कैथल (कलायत), कुरूक्षेत्र (पेहोवा, थानेश्वर), पंचकुला (पिंजौर), पानीपत, सिरसा आदि मुख्य कला के केन्द्र रहे थे। प्रतिमाओं में रोहतक से प्राप्त गणेश शीर्ष, सिरसा से प्राप्त विष्णु मूति, थानेश्वर से प्राप्त जैन तीर्थंकर तथा पिंजौर से प्राप्त जैन शीर्ष व जैन परीकर इस काल की कला शैली की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, इनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है। अग्रोहा (हिसार) से प्राप्त इस काल की विशेष प्रतिमाऐं पार्वती, नग्न विष्णु, लक्ष्मी–नारायण, सूर्य, उमा–महेश, विष्णु–लक्ष्मी, हरिहर, महिषमर्दिनी व कुबेर की है। इसके अतिरिक्त हाँसी से जैन तीर्थंकरों, यक्ष–यक्षी, चौबीसी, जीन के माता–पिता की महत्वपूर्ण मूर्ति प्राप्त हुई है। सातवीं शताब्दी का एक सुन्दर मादा देवी का सिर (पार्वती) भी अग्रोहा से प्राप्त हुआ है। प्रतिमा यह अति सुन्दर खड़ी प्रतिमा 145 से0मी0 की है। इसके सिर पर ताज व पीछे अंलकृत प्रभामण्डल है। इन्होनें अंलकृत गहने पहने हुए हैं। इनके गले में हार, कानों में कुण्डल तथा हाथ में कडे व बाजूबन्द पहने हैं। नग्न विष्णु प्रतिमा 8वीं शताब्दी की है इसकी मुख्य दो भुजाएँ कोहनियों से नीचे टूटी हुई हैं। इसके अतिरिक्त बाएँ हाथ में एक चक्र दिखाया है जो कि उदीप्तमान नर रक्षक आकृति के ऊपर रखा है। इनका दाँया मुख्य हाथ मादा रक्षक आकृति के सिर के ऊपर रखा है। इसमें अयुध्या पुरूषों को बहुत आकर्षक ढ़ंग से खडा दिखाया गया है, जिन्होनें साधारण वस्त्र पहन रखे हैं। इनकी छाती पर श्री वत्स का चिन्ह भी अंकित है। यह प्रतिमा 8वीं शताब्दी की मानी गई है। अग्रोहा से प्राप्त 9वीं शताब्दी की नवराह ग्रह मूर्ति लक्ष्मी–नारायण, सूर्य, हरिहर, महिष–मर्दिनी व कुबेर की मूर्ति भी उल्लेखनीय हैं। पद्मासन में बैठे ध्यानस्थ तीर्थंकर की 10वीं–11वीं शताब्दी की प्रतिमा भी उल्लेखनीय है। इस प्रतिमा को डभार पद्धति द्वारा बनाया गया है। इसके अतिरिक्त यक्ष व यक्षी की भी प्रतिमाएँ अग्रोहा से प्राप्त हुई हैं। अग्रोहा से प्राप्त लक्ष्मी–नारायण प्रतिमा चण्ड़ीगढ़ के कला संग्राहलय में है। इसमें एक रक्षक आकृति को बहुत आकर्षक ढ़ंग से उर्ध्वाकार शंख पकड़े दिखाया गया है। इस प्रतिमा के प्रभामण्डल को आठ पंखुड़ी वाला दिखाया गया है। इसकी पिछली पट्टी समतल है। रक्षक के गले में मोतियों का हार, आकर्षक केश व भगवान का मोतियों से सजा ताज है। यह प्रतिमा 12वीं शताब्दी की मानी गई है। सूर्य भगवान की प्रतिमा में सूर्य देवता को हाथों में कमल पकड़े दिखाया गया था परन्तु कोहनियों से नीचे के हाथ नष्ट हो चुके हैं। देवता ने गहनों व मोतियों से जडा एक मुकुट पहन रखा है। इसके अतिरिक्त अवयांगा, धोती, कमर पर एक सुनहरे रंग की चेन है तथा लम्बे जूते पहन रखे हैं। सूर्य देवता के पटके को घुटने तक लम्बा दिखाकर दोनों हाथों के ऊपर से बाहर जाते दिखाया गया है। इनके सिर के पीछे बने प्रभामण्डल में कमल के फूल की पत्तियों को सूर्य की किरणों के समान दर्शाया गया है। इनके दोनों तरफ गंर्धवों को खडे दिखाया गया है। इनके ठीक दाएँ ओर खडे नर गंर्धव ने अपने हाथों में एक धनुष पकड़ रखा है। दूसरी तरफ खड़ी आकृति ने भी कुछ पकड़ रखा है, परन्तु मूर्ति के टूटने के कारण यह स्पष्ट नहीं है। यह मूर्ति 12वीं शताब्दी की मानी गई है। इस समय उमा–महेश की पूजा–अर्चना उनकी प्रसिद्धि को दर्शाती है। इस 52 सें0 मी0 ऊँची प्रतिमा में दैव–दम्पति को पाँच रथ वाली पीठिका पर बैठे दिखाया गया है। काँपते हुए शिव व उमा के चरण क्रमशः पैर बैल व शेर के ऊपर रखे हुए हैं। विष्णु को गरूड़ पर ललितासन में बैठा दिखाया गया है और लक्ष्मी को इनके बाएँ तरफ गोद में बैठा दिखाया गया है। गरूड़ के दो हाथों को उडने की स्थिति में दर्शाया गया है जो कि देवता के दाएँ पैर और बाएँ घुटने को सहारा दिए हुए है। विष्णु को सामान्य गहने पहने दर्शाया है जिसमें श्री वत्स और वनमाला तथा क्षैतिज शंख को वर्ण्द्धा के सामान्य हाथ में पकड़ रखा है। इनके दाईं तरफ कमल का फूल है। सामान्य बाएँ हाथ में चक्र है। लक्ष्मी का दाँया हाथ नारायण के कन्धे पर और बाँया हाथ वर्द्धा मुद्रा में छिपा हुआ है। इसने सभी गहने भी पहन रखे हैं। इन्होनें दाईं पैर मोड़ रखी है जबकि बाईं नीचे लटका रखी है। इस प्रतिमा में ध्यान देने वाली बात यह है कि इन्होनें अपना बाँया पैर हाथी के सिर के ऊपर रखा हुआ है। इसलिए यह प्रतिमा अपने आप में अनुपम है इसको हम अन्य कहीं भी नहीं देख सकते हैं। इन देवताओं की पृष्ठभूमि में कमल की फूल की पंखु ड़ियों का अलंकरण है। शंख पकडने का यह तरीका भी बहुत कम देखने को मिलता है। हरिहर की यह प्रतिमा 57 ग 37 से0 मी0 मापी गई है। हरिहर के दोनों तरफ त्रिशूल पुरूष और चक्रपुरूष और एक नारी आकृति ने लम्बी डंड़ी वाला कमल का फूल पकड़ रखा है। इस दृश्य में नंदी बैल को त्रिशूल पुरूष और गरूड़ के सामने चित्रित किया गया है। इस दृश्य में चक्र पुरूष के सामने वीरसान को भी दिखाया गया है। इस दृश्य में सबसे ऊपर वाले कोणों में ब्रह्मा और सूर्य तथा नीचे वाले भाग में सागा व देवताओं को दर्शाया गया है। वास्तविकता में इस प्रतिमा की पंच रथ पीठिका पर चार रेखाओं का लेख लिखा हुआ है। परन्तु इनमें से पहले कुछ अक्षरों को ही पढ़ा जा सकता है। यह प्रतिमा इस काल की कला का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है। रोहतक जिले से प्राप्त मूर्तियाँ धार्मिक मान्यताओं पर प्रकाश डालती हैं। अस्थल बोहर से प्राप्त सूर्य, उमा, महेश व चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा कलात्मक दृष्टि से अत्यन्त रोचक हैं। इस जिले से प्राप्त यक्ष–यक्षी प्रतिमा भी विशेष उल्लेखनीय है। 8वीं से 11 वीं शताब्दी की अनेक मूर्तियाँ रोहतक जिले से प्राप्त हुई हैं। यहाँ से टेराकोट की मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं। इसके अतिरिक्त अस्थल बोहर से प्राप्त सूर्य, उमा–महेश्वर एवं चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा कली अंकन की दृष्टि से अत्यन्त रोचक हैं तथा इस क्षेत्र से प्राप्त मूर्तियाँ धार्मिक मान्यताओं पर प्रकाश डालती हैं।

कैथल जिले के कलायत गाँव में आठवीं शताब्दी का गुर्जर प्रतिहार शैली में बना मन्दिर प्राचीन प्रतिमाओं की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। राजा भोजदेव द्वारा बनवाया गया विष्णु मन्दिर 9वीं शताब्दी का प्रसिद्ध मन्दिर था इस मन्दिर केरख–रखाव के लिए व्यापारियों से कर लिया जाता था। इस मन्दिर से प्राप्त प्रतिमाएँ हरियाणा के इतिहास में विशेष स्थान रखती हैं क्योंकि इन प्रतिमाओं में रामायण व महाभारत के दृश्यों को दर्शाया गया है। रामायण व महाभारत के दृश्यों को मूर्ति रूप में दर्शाना अपने आप में नया कार्य था। यह मूर्तियाँ पत्थर की बनी हुई हैं। इन दृश्यों में मानवाकृतियों को वार्तालाप करते हुए दिखाया है अर्थात सम्पूर्ण दृश्य को संयुक्त रूप से दिखाने का प्रयास किया गया है। कुछ मूर्तियों में दो व तीन मानवाकृतियों को भी दिखाया है। रामायण व महाभारत के उपविषय इस प्रकार है जैसे राम व लक्ष्मण का गरूड़ पक्षी के साथ होना व कृष्ण का रथ पर होना आदि। कुरूक्षेत्र जिले के दो स्थलों (पेहोवा व थानेश्वर) से प्रतिहार युग की महत्वपूर्ण मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। प्राचीन शिव मन्दिर में हिन्दू धर्म से सम्बन्धित देवी व देवताओं की मूर्तियाँ हैं। यह मन्दिर कुरूक्षेत्र जिले के पेहोवा तहसील में स्थित है। यद्यपि इस मन्दिर का पुर्नुत्थान किया गया है परन्तु मुख्य द्वार की चौखट पर प्राचीन मन्दिर की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। इस द्वार पर स्थापित मूर्तियों में से मुख्य रूप से दो महत्वपूर्ण हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं–नवगृह व सप्तमृतकास। इसके अतिरिक्त गंगा व यमुना देवी की आकृति और विष्णु की ललितबिम्बा की प्रतिमा यह सिद्ध करती है कि प्राचीन काल में यह विष्णु का मन्दिर रहा होगा। यह मूर्तियाँ 9वीं व 10वीं शताब्दी की है। कुरूक्षेत्र (थानेश्वर) में पुरातात्विक सर्वेक्षण तथा उत्खन्न से अनेक धर्मों से सम्बन्धित अवशेष प्राप्त हुए हैं। जैन धर्म से सम्बन्धित एक विशाल तीर्थंकर सिर यहाँ से प्राप्त हुआ है। हल्के पीले रंग के पत्थर से निर्मित 28 ग 17 से0मी0 का यह सिर लगभग 10वीं–11वीं शताब्दी की है। पंचकुला के पिंजौर शहर का भीमा

देवी मन्दिर भी विशेष उल्लेखनीय है। यह मन्दिर 9वीं0–11 वीं0 शताब्दी में बना था। इस मन्दिर की बाह्य दीवार को अनेक देवी और देवताओं की मूर्तियों के साथ–साथ सामाजिक जीवन के चित्रण के द्वारा सजाया गया है। इस स्थान से बड़ी संख्या में शिव, पार्वती, अग्नि, वरूण, सूर्य, विष्णु, गणेश, कार्तिकेय, मिथुन, वरूण व अप्सरा इत्यादि पाए गए हैं। इसके अतिरिक्त अन्य अंलकृत पटर्नस जैसे सामाजिक प्रफोरमेन्स, फ्लोरल ड़िजाइन, पशु सिंहासन, संगीतज्ञ और काम विषयक दृश्य इत्यादि को शामिल किया गया है। इस मन्दिर का संगीत से सम्बन्धित दृश्य विशेष उल्लेखनीय है इसमें एक मानवाकृति न होकर अनेक मानवाकृतियों की भाव–भंगिमा को सामूहिक रूप में दर्शाया गया है। इस दृश्य को तीन भागों में बाँटा गया है। बीच वाले भाग में एक पुरूष आकृति ढ़ोलक बजा रहा है तथा अन्य दो स्त्री आकृति नृत्य की मुद्रा में हैं। इन आकृतियों के हाथ–पैर संचालन की मुद्रा में है। इस दृश्य को दो स्तम्भों के बीच में दिखाया गया है। इनके दोनो तरफ भी लगभग इसी प्रकार के दो दृश्य दर्शाए गए हैं। इन आकृतियों में विशेष बात यह है कि इनको बहुत संतुलित दिखाया गया है। शारीरिक अनुपात भी विशेष उल्लेखनीय है। ये आकृतियाँ देखने में बहुत आर्कषक प्रतीत होती है। यह दृश्य भी 9वीं–11वीं शताब्दी का माना गया है। शिव–पार्वती की प्रतिमा भी विशेष उल्लेखनीय है। इस प्रतिमा में शिव पार्वती के पास–पास बैठे दिखाया गया है। शिव–पार्वती को ललितासन में बैठे दिखाया गया है। शिव ने सिर के पीछे प्रभामण्डल व ऊपर मुकुट धारण कर रखा है। इनके गले में हार तथा चेहरा चौडा है। इनको बैल के ऊपर बैठे चित्रित किया गया है। माता पार्वती को थोडा तिरछा बैठे दिखाया गया है। इनके सिर पर मुकुट व गले में हार धारण किया है। वक्ष स्थलों को विशेष रूप से उभारा गया है। इस काल में शिव पार्वती प्रसिद्ध देवी–देवता थे। यह 9वीं–11 वीं शताब्दी की बनी सुन्दर प्रतिमा है। पानीपत के मीर अहमद के मकबरे एवं मस्जिद के प्रांगण से 9वीं व 10 वीं0 शताब्दी की अत्यन्त सुन्दर हरिहर एवं लक्ष्मी सहित शेषशायी विष्णु की एक मूर्ति तथा कुछ अन्य खण्डित मूर्तियाँ प्राप्त हुईं थी जो अपने आप में अनुपम उदाहरण है। इस प्रतिमा की विशेषता यह है कि यह आनुपातिक दृष्टि से उतम है। विष्णु को बड़े आकर्षक ढ़ंग से लेटे हुए दिखाया है। इसके अतिरिक्त पानीपत के देवी मन्दिर के प्रांगण में 9–10वीं शताब्दी की सबसे प्राचीन मूर्तियाँ हैं। 11 वीं–12 वी0 शताब्दी में हरियाणा पर विदेशी आक्रमण शुरू हो गये थे। इन विदेशी आक्रमणें में से दो मुख्य थे, महमूद गजनी तथा मोहम्मद गौरी। इन आक्रमणकारियों की विशेष नजर हरियाणा के धन–धान्य से परिपूर्ण मन्दिरों पर थी। इन्होनें हरियाणा के मन्दिरों व मूर्तियों को तोडकर नष्ट कर दिया तथा इनसे प्राप्त अति कलात्मक व कीमती मूर्तियों को अपने साथ ले गये। महमूद गजनी ने थानेसर (स्थानेश्वर) के चक्रस्वामिन की कास्य निर्मित आदमकद मूर्ति को गजनी भेजकर रंगभूमि में रखवा दिया था। इस प्रकार विदेशी आक्रमण से हरियाणा की मूर्तिकला का ह्रास हो गया। सल्तनत काल के शासकों ने हरियाणा राज्य की कला के ह्रास हुए अवशेषों को भी नहीं छोडा। इन शासकों ने मन्दिर व मूर्तियों के मलबों से अपने आवास स्थानों को बनवा दिया। इससे हरियाणा की मूर्तिकला को भारी क्षति हुई। इस समय के शासक मुस्लिम थे। ये मूर्तिकला के विरोधी थे, इसलिए इन शासकों ने मूर्तिकला को फलने–फूलने नहीं दिया। मुगलकाल में भी मूर्तिकला को राजकीय संरक्षण प्राप्त नहीं था। इन शासकों का विशेष ध्यान स्थापत्य कला पर था। मुस्लिम धर्म में मूर्तिकला को वर्जित माना गया है, इसलिए इस काल के शासकों ने मूर्तिकला को महत्व नहीं दिया। वस्तुतः हरियाणा समाज में व्याप्त हिन्दू धर्म के लोगों की आस्था मूर्ति पूजा में थी। यही कारण है कि इस काल में भी हिन्दू धर्म की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इसके अतिरिक्त जैन व बौद्ध धर्मों की मूर्तियाँ भी मिली हैं। इस समय की प्राप्त मूर्तियों की संख्या बहुत कम है। ब्रिटिश काल में भारत पर अग्रेंजो का शासन था। हरियाणा में 19वी0 शताब्दी की मूर्तियाँ अत्यधिक मात्रा में मिली हैं। अग्रेंजों ने सभी धर्मों के लोगों को समानता की दृष्टि से देखा, इसलिए सभी धर्मों का विकास हुआ। इस काल मे हिन्दू, बौद्ध, व जैन धर्म की अनेक मूर्तियाँ मिली हैं परन्तु धीरे–धीरे मूर्तियों के निर्माण में कमी दृष्टिगोचर होने लगी। इस काल की मूर्तियों में मुख्यतः पार्श्वनाथ, महावीर, यक्ष–यक्षी, विष्णु, ब्रह्मा व लक्ष्मी आदि हैं। यह मूर्तियाँ मुख्यतः राजस्थान से लाकर हरियाणा के मन्दिरों में स्थापित की गई हैं। इसका मुख्य कारण मूर्तियों के निर्माण के लिए उपयोगी पत्थर का उपलब्ध न होना है। उत्तम कारीगरों की कमी से भी हरियाणा में मूर्तिकला अधिक विकसित नहीं हो सकी।

अतः हम कह सकते हैं कि हरियाणा में मूर्तिकला के निर्माण की परम्परा बहुत प्राचीन है। यहाँ विभिन्न धर्मों की मूर्तियों का प्राप्त होना इस बात का संकेत है कि यहां विभिन्न धर्म व संस्कृतियाँ विकसित हुई। हरियाणा क्षेत्र में पूर्ण मूर्तियों की संख्या बहुत अधिक थी परन्तु विदेशी आक्रमणकारियों ने इन प्रतिमाओं को काफी नुकसान पहुंचाया। इस क्षेत्र से प्राप्त मूर्तियाँ अपने आप में बहुत महत्व रखती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, मनजीत–कला कौशल, लक्ष्मी पब्लिकेशन, 1994 पृ0–3
2. दुखी, लीलाधर–हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत मानक पब्लिकेशन दिल्ली–1992, पृ0–67.
3. Surajbhan. Excavation At Mitathal, Kurukshetra, J. S. H., Part-1, 1968, page-14
4. दैनिक जागरण (सांझी)–सोमवार, 7 फरवरी 2011, पृ0–1
5. अग्रवाल जगन्नाथ–'प्राचीन हरियाणा', 1993, पृ0–66.
6. Haryana threw the Ages directorate of Archaeology museums Kurukshetra Uuniversity Kurukshetra published by director public relation Haryana.
7. Shukl SP. Sculpture Terracotta At Archaeology Museums, Kurukshetra University, Kurukshetra, 1983, page- 15
8. हाण्डा, देवेन्द्र–हरियाणा से प्राप्त मूतियाँ (हरियाणा संवाद) अंक–21–22, नवम्बर–1981, पृ0–44.
9. Shukl SP. Sculpture Terracotta At Archaeology Museums, Kurukshetra University, Kurukshetra, 1983, page-20.
10. Shrivashtav HL. ExcavationAtAgroha, M.A. M. I. No. 61, Delhi, 1952, page-3.
11. Kumar Rajender. History And Archeology of Haryana, Unpublish Research Work, Kurushetra University, Kurushetra, 1996, page-131-135.
12. देवी शीला–आर्ट ट्रेडिशन इन हरियाणा (अपटू 1200 ए0ड़ी0) अप्रकाशित शोध प्रबन्ध के0यू0के0, 1975, पृ0–161